भा.वि.प्रा. के 20वें वर्षगॉठ समारोह के अवसर पर अध्यक्ष महोदय का संदेश

(अध्यक्ष, भा.वि.प्रा. की ओर से क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशकों/विमानपत्तन निदेशकों/स्टेशन प्रभारियों द्वारा पढ़े जाने हेतु)

प्रारम्भ में, भा.वि.प्रा. के 20वें वर्षगॉठ समारोह के अवसर पर भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के स्थानीय प्रतिनिधि के माध्यम से आप सब को संबोधित करना मेरे लिए खुशी की बात है ।

देवियों एवं सज्जनों ! आज हम यहॉ भा.वि.प्रा. के 20वें वर्षगॉठ समारोह मनाने के लिए उपस्थित हुए हैं । इस आयोजन के पीछे पूर्व की उपलब्धियों से आगे निकलते हुए भविष्य में नई संभावनाओं की खोज करने की भावना निहित है । इस प्रकार इस अवसर पर हम उन लोगों को सम्मानित करेंगे जिन्होंने भा.वि.प्रा. का झंडा ऊँचा रखने के लिए कठिन परिश्रम किया है एवं अपना पसीना बहाया है । यह एक दूसरे से नए जोश एवं प्रेमपूर्वक मिलने एवं बातचीत करने का तथा नए विमानन अवसंरचनाओं के विकास के लिए नए उत्साह एवं सहयोग की भावना से आगे बढ़ने का अवसर है ।

2. इस प्रकार इस वर्षगॉठ ने हमें पिछले कुछ सालों में इस संगठन द्वारा अर्जित उपलब्धियों तथा इसके द्वारा अपने सम्मानित ग्राहकों, अंशधारकों, कर्मचारियों एवं पूरे देश को प्रदान किए गए लाभों को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया है ।

3. आशा है कि इससे हमारे कर्मचारियों को और अधिक ग्राहक अनुकूल बनने की दिशा में पुन:ध्यान केंद्रित करने की तथा विमानन उद्योग एवं सभी अंशधारकों की बेहतरी के लिए कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त होगी । इस अवसर पर मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि वर्ष 2013-14 में भा.वि.प्रा. ने राजकोष में 1438.12 करोड़ रूपए की राशि का योगदान दिया है जिसमें लाभांश के रूप में दिया गया 147 करोड़ रू. का भुगतान भी शामिल है । इसके अलावा भाविप्रा ने 658 करोड़ रू. का आय कर के रूप में तथा 663 करोड़ रूपए का अन्य करों एवं शुल्कों के रूप में योगदान दिया है । वित्तीय मोर्चे पर भाविप्रा का कुल राजस्व वित्तीय वर्ष 2013-14 के 8170 करोड़ रू. की तुलना में वित्तीय वर्ष 2014-15 में बढ़कर 8743 करोड़ रू. हो जाने का अनुमान है । कर के पश्चात लाभ 1533 करोड़ रू. होने की संभावना है जो पिछले वर्ष की तुलना में 92 करोड़ रू. अधिक होगा ।

4. विमान यातायात में क्रमिक वृद्धि नागर विमानन उद्योग के संपोषण के लिए अत्यंत आवश्यक है । पिछले दशक में भारत में इस क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है । वित्तीय वर्ष 2004-05 में विमान यात्रियों की संख्या 59 मिलियन थी जो वित्तीय वर्ष 2014-15 में 188 मिलियन हो गई । इस प्रकार इसमें तीन गुना वृद्धि हुई है तथा वार्षिक वृद्धि दर 12% प्रति वर्ष दर्ज की गई है । भाविप्रा मांगों तथा हवाईअड्उा एवं ए एन एस अवसंरचना के क्षेत्र में उपलब्ध क्षमता अनुपात के बीच के अंतर को भरने में सामंजस्य बिठा पाने में सफलतापूर्वक सक्षम रहा । यात्रियों को संभालने की क्षमता में तीन गुना वृद्धि हुई है । वित्तीय वर्ष 2006 में यह 72 मिलियन थी जो पिछले वित्तीय वर्ष 2013-14 में बढ़कर 220 मिलियन हो गई है । ए एन एस अवसंरचना का उन्नयन भी वैश्विक रूझानों के अनुरूप रहा । उम्मीद है कि वर्तमान वित्तीय वर्ष 2014-15 के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में 12% अधिक वृद्धि होगी । अनुमान लगाया गया है कि 2022-23 में यात्रियों की संख्या वर्तमान संख्या 188 मिलियन से बढ़कर 320 मिलियन हो जाएगी । इसलिए भाविप्रा हवाईअड्डों पर यात्रियों की सुख-सुविधाओं के स्तर में सुधार लाने के लिए अधिक से अधिक सॉफ्टवेयर समाधानों को अपनाकर लम्बे समय तक बना के रखी जा सकने वाली अवसंरचनाओं के विकास एवं निर्माण हेतु निरंतर प्रयास कर रहा है ।

5. हमारे हवाईअड्डों पर विद्यमान भाविप्रा के कार्मिकों का ही यात्रियों के साथ पहला सम्पर्क होता हे । इसलिए यह माना जाता है कि वे वहॉ भाविप्रा तथा भारत सरकार के राजदूत के रूप में मौजूद हैं । हवाईअड्डे पर आने वाला कोई यात्री हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है तथा मैं यह मानता हूँ कि वे हमारे ऊपर उपकार करने वाल लोग हैं तथा हम अपनी आजीविका के लिए उन पर निर्भर है । इसलिए हमें हवाईअड्डों पर अपनी कार्य-संस्कृति में बदलाव लाना होगा ताकि हम इसे आतिथ्य सत्कार उद्योग, जहॉ पर ग्राहकों की संतुष्टि अस्तित्व के लिए सबसे बडी जरूरत होती है, के समान बना सकें । इसलिए भाविप्रा के राजस्व में अपना योगदान देने वाले यात्रियों, एयरलाइनों, कार्गो सम्भालने वाले लोगों व दूसरे अंशधारकों पर हमें अधिक से अधिक ध्यान व उन्हें समुचित महत्व देना चाहिए तथा मालिक होने जैसा भाव प्रदर्शित करने से बचना चाहिए । इस दिशा में विभिन्न हवाईअड्डों के हालिया बेंचमार्किंग स्कोर से उत्साहवर्धक परिणाम देखने को मिले हैं । ए सी आई द्वारा कोलकाता की की गई ए एस क्यू रेटिंग में उसे 5 के स्केल पर 4.66 अंक प्राप्त हुए तथा कोलकाता हवाईअड्डे ने पिछले लगातार दो सालों से सबसे अधिक उन्नत हवाईअड्डे

का पुरस्कार प्राप्त किया है । ए सी आई द्वारा अक्टूबर-दिसम्बर 2014 की तिमाही के दौरान हमारे 11 प्रमुख हवाईअड्डों के लिए किए गए नवीनतम सर्वेक्षण में प्राप्त हुआ औसत ए एस क्यू 4.35 है जब कि पूरे विश्व का औसत 4.11 है । भाविप्रा ने वर्तमान वर्ष के दौरान 19 हवाईअड्डों के आई एस ओ प्रमाणन-आई एस ओ 14001 की प्रक्रिया भी शुरू की है तथा ग्राहकों के प्रति हमारे सरोकारों को प्रदर्शित करने की दिशा में यह भी लम्बी दूरी तय करेगा ।

6. वित्तीय स्थिति को रेखांकित करने के साथ मुझे यह सूचित करते हुए अत्यंत गर्व महसूस हो रहा है कि भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने कार्यावधि के दौरान मेट्रो एवं गैर-मेट्रो शहरों में 60 से अधिक हवाई अड्डों का विकास किया है । इसी प्रयास में, क्षेत्रीय एवं दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ने की सरकार की नीति को बढ़ावा देने के लिए भा.वि.प्रा. बीकानेर, जैसलमेर, भटिण्डा, कड्डप्पा, पुदुचेरी, जलगांव तथा राजमुंदरी में छोटे हवाई अड्डों का भी विकास करने में समर्थ हुआ है । हालांकि हम इन दूरस्थ क्षेत्रों में हवाई अड्डों के इस प्रकार के विकास के बारे में आशंकित हो सकते हैं, जहॉ पर एयरलाइन्स द्वारा सुविधाओं के उपयोग में कोई रूचि नहीं दर्शायी गई है तथा न ही प्रचालन शुरू किया गया है, परन्तु मैं इन आशंकाओं का उत्तर इस तर्क के साथ देना चाहूँगा कि कुछ अवसंरचनाएं ऐसी होती हैं जोकि आपूर्ति चालित होती हैं तथा उन पर आई.आर.आर. मानक लागू नहीं किए जाने चाहिएं । यदि यही स्थिति होती तो, आई.आर.आर. मानदण्डों के आधार पर अंग्रेजों के शासनकाल के दौरान रेलवे कभी विकसित नहीं हो पाती, क्योंकि यात्री ट्रैफिक का आकलन किस प्रकार किया जाता जब यात्रियों को उसकी उपयोगिता तथा उनके सामाजिक-आर्थिक जीवन पर उसके प्रभाव की जानकारी ही नहीं थी । इसलिए रू0 2700 करोड़ से अधिक लागत के पूंजीगत कार्य हाथ में लिए गए हैं जिसमें चण्डीगढ़, जयपुर, किशनगढ, खजुराहो, जम्मू, तेजू, पेक्यॉग, पोर्टब्लेयर, गोवा, वडोदरा, तिरूपति, हुबली तथा बेलगाम हवाई अड्डों के कार्य शामिल हैं ।

7. विमान दिक्चालन सेवाओं के मोर्चे पर भी, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने अत्याधुनिक ऑटोमेशन प्रणाली को प्रारम्भ कर उत्कृष्ट कार्य किया है तथा इस प्रणाली का अगस्त 2014 से कोलकाता हवाई अड्डे पर प्रचालन आरम्भ हो चुका है। उपग्रह आधारित दिक्चालन प्रणाली (एस बी ए एस) के मोर्चे पर भी भा.वि.प्रा. ने 'इसरो' के साथ मिलकर

'गगन' का प्रचालन शुरू कर दिया है । पुन: यह आपूर्ति आधारित विकास है । अधिकांश एयरलाइन्स द्वारा अभी अपने विमानों को इस प्रणाली के अनुरूप बनाया जाना शेष है ताकि वे इन सुविधाओं का उपयोग दिक्चालन हेतु कर सकें।

8. विमान यातायात प्रवाह प्रबंधन में मांग एवं क्षमता का संतुलन बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है । मुझे यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि विमान यातायात प्रवाह प्रबंधन (ए टी एफ एम) का शुरूआती चरण शीघ्र ही आरंभ होने वाला है तथा इससे भारत विश्व के उन गिने-चुने ए.एन.एस.पी. में शामिल हो जाएगा जिनके पास यह प्रणाली है । इन सभी ने मिलकर भारत को एक गौरवपूर्ण क्षण दिया जब भा.वि.प्रा. ने लगातार प्रतिष्ठित अवार्ड जीते - जैसे एयर नेविगेशन सर्विसेज जेन्स ए टी सी अवार्ड 2014, दो ए टी सी ग्लोबल अवार्ड 2013 । ए.एन.एस. के क्षेत्र में अवार्डों की श्रृंखला में एक और प्रतिष्ठित अवार्ड जुड़ गया जब तकनीकी उन्नयन को विकसित कर उसे विश्वस्तरीय विमान यातायात नियंत्रण प्रणाली के समकक्ष बनाने के लिए गोल्डन पिकॉक इनोवेटिव प्रोडक्ट एवं सर्विस अवार्ड 2015 प्राप्त हुआ।

9. क्षमता विकास के क्षेत्र में, भा.वि.प्रा. ने कई नई पहल की है । प्रचालन सुपरवाइजरों तथा तकनीकी प्रबंधकों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से भारत में भा.वि.प्रा. तथा ई एन ए सी-फ्रांस के एविएशन विश्वविद्यालय द्वारा ए एन एस पी प्रबंधन में एक वर्षीय एडवांस मास्टर्स प्रोग्राम शुरू किया गया है । साथ ही, भा.वि.प्रा. ने एम आई टी आर ई कार्पोरेशन के सहयोग से सी एन एस - ए टी एम के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास की पहल की है । ये सभी प्रयास तकनीक, मानव संसाधन एवं प्रक्रियाओं की सहक्रिया द्वारा सुरक्षा स्तरों को ऊपर उठाने के लिए किए गए हैं ।

10. भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण का एक और संभावित क्षेत्र कार्गो यातायात का है जोकि 7% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से वित्तीय वर्ष 2004-05 के 1.3 मिलियन मीट्रिक टन से दोगुना होकर वित्तीय वर्ष 2014-15 के दौरान 2.5 मिलियन मीट्रिक टन हो गया है। वर्ष 2014-15 के दौरान, इसने पिछले वर्ष के मुकाबले 10% की अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की है। विनिर्माण के क्षेत्र में बड़ी छलांग एवं ई-कामर्स के विकास के लिए, जिसमें लाजिस्टिक्स की एक महत्वपूर्ण भूमिका है, भा.वि.प्रा. देश में घरेलू एयर कार्गो नेटवर्क विकसित करने हेतु पूर्णत: तैयार है । साथ ही भा.वि.प्रा. ने 24 ऐसे घरेलू हवाईअड्डों को कॉमन यूजर डोमेस्टिक

कार्गो टर्मिनल के रूप में विकसित करने की प्रक्रिया आरंभ कर दी है । 24 चिन्हित हवाई अड्डों में से तीन स्थापित भी किए जा चुके हैं ।

11. आगे, भा.वि.प्रा. ने तकनीकी एवं ई-प्रणाली को आरंभ करने की पहल की है । यह एकीकृत कार्गो प्रबंधन प्रणाली (आई सी एम एस) का उन्नयन कर रही है । कोलकाता एवं चेन्नई हवाई अड्डों पर एक अत्याधुनिक ऑटोमेटिड स्टोरेज एवं रिट्रीवल सिस्टम (ए एस आर एस) आरंभ किया जा चुका है । हम 10 हवाई अड्डों पर ई-कार्यालय तथा मल्टी-एयरपोर्ट ए ओ सी सी लागू करने की दिशा में कार्यरत हैं तथा रिवर्स ऑकशनिंग के साथ ई-निविदा को भी आरंभ किया गया है । हम इस वर्ष के अंत तक 13 हवाई अड्डों पर 'स्वचालित चेक-इन' एवं 'सेल्फ बैगेज ड्रॉप' की प्रक्रिया को आरंभ करने की प्रक्रिया में हैं ।

12. भा.वि.प्रा. प्रबंधन अपने कर्मचारियों के कल्याण के प्रति अपने कर्तव्यों तथा सरोकारों के बारे में सजग है और साथ ही भावी चुनौतियों को पूरा करने के लिए आवश्यक क्षमता विकास के लिए भी सजग है। हमने लंबे समय से लम्बित इन्टर-से-सीनियॉरिटी के मुद्दे को सुलझा लिया है। कुल मिलाकर प्रबन्धन तथा यूनियन व संघों के मध्य मधुर संबंध हैं जो कि एक अच्छा संकेत है तथा इसका किसी भी संगठन की कार्यशैली को सुधारने की प्रक्रिया पर सीधा प्रभाव पड़ता है। भा.वि.प्रा अपने सामाजिक कर्तव्यों के प्रति भी सजग है तथा वह देश में आने वाली आपदाओं की चुनौतियों का सामना करने के लिए सदैव अग्रणी रहा है। इसने विजाग में हुदहुद चक्रवाती तूफान, श्रीनगर में बाढ़ तथा भुवनेश्वर में फालीन चछवती तूफान का सामना किया। भारत सरकार द्वारा 2 अक्तूबर, 2014 को प्रारम्भ किए गए 'स्वच्छ भारत अभियान' के साथ लय मिलाते हुए, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने अपने सी एस आर कार्यक्रम के तहत देश के 37 जिलों के 765 विद्यालयों में शौचालय निर्माण का काम शुरु किया है। भाविप्रा ने स्वच्छ विद्यालय अभियान की भी शुरुआत की है तथा इस कार्यक्रम के लिए 35 करोड़ रूपये की राशि निश्चित की है। इसी प्रकार, देश में खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिभावान खिलाड़ियों को छात्रवृत्ति देने की भी शुरुआत की गई है। अन्तरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर सफलता अर्जित करने वाले कुछ खिलाड़ी आज यहां उपस्थित हैं तथा हम उनके प्रयासों की सराहना करते हैं व उनकी उपलब्धियों की प्रशंसा करते है।

13. अपनी बात समाप्त करने से पूर्व, मैं संक्षेप में बताना चाहूंगा कि प्रबंधन ने गैर-वैमानिक राजस्व बढ़ाने के लिए क्या नए प्रयास किए हैं। विमानपत्तन निदेशकों को कई नई गतिविधियों के विषय में परामर्श दिया गया है जो शीघ्र ही प्रारम्भ हो जानी चाहिए। इसमें शहर की ओर (सिटी साइड) विकास शामिल है। उन्हें इन कार्यों को प्रारम्भ करने के लिए दो माह की समय-सीमा दी गई है ताकि वे अधिकतम राजस्व अर्जित कर सकें।

भा.वि.प्रा. एस पी वी मॉडल के तहत ग्रीनफील्ड या ब्राउनफील्ड हवाई अड्डों के विकास के लिए राज्य सरकारों के साथ भी सक्रिय है। इस मॉडल के तहत राज्य सरकार भी पार्टनर होगी तथा अंशधारकों में से एक होगी। अब हमें नए ग्रीनफील्ड या ब्राउनफील्ड हवाई अड्डों के विकास के लिए एक राजस्व मॉडल की तलाश करनी होगी ताकि ये हवाई अड्डे आर्थिक रूप से व्यवहार्य तथा धारणीय हो सकें। इसके लिए हमें उपर्युक्त गतिविधियों में अत्यधिक विशेषज्ञता की आवश्यकता है। अभी तक, हम एकाधिकारवादी प्रणाली के अभ्यस्त थे। किन्तु अब परिस्थितियां बदल गई हैं। हमें यह समझना होगा कि हमें योजना, इंजीनियरिंग तथा प्रचालनों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपनी क्षमताओं को बढ़ाने की बेहद आवश्यकता है। तथा इस प्रकार का समस्त क्षमता विकास अन्तरराष्ट्रीय स्तर का होना चाहिए ताकि हम बाजार में प्रतिस्पर्द्धा कर सके। प्राधिकरण ने मौजूदा हवाई अड्डों के शहरी ओर के विकास, ग्रीनफील्ड तथा मौजूदा ब्राउनफील्ड हवाई अड्डों का राज्य सरकार के साथ विकास और निगमित मुख्यालय स्तर पर दूरी को कम करने के लिए आने वाली चुनौतियों को पूरा करने हेतु अपनी क्षमता विस्तार के लिए संगत एजेंसियों को कार्य पर लेने करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। अन्य सार्वजनिक लोक उपक्रमों में प्रचलित तथा अब वैश्विक प्रवृत्ति बन चुकी पद्धतियों के आधार पर हवाई अड्डों के विकास की प्रणाली प्रारम्भ करने लिए प्राधिकरण प्रयासरत है। हमें अपने मौजूदा हवाई अड्डों के सौन्दर्य तथा वातावरण को सुधारने के लिए वैश्विक प्रवृत्तियों के साथ कदम मिलाने होंगें ताकि हमारे हवाई अड्डे विश्ववस्तरीय बन सकें। इसके लिए हम शीघ्र ही मीडिया विज्ञापन व साइनेज नीति बनाएंगे ताकि भाविप्रा हवाईअड्डे सुन्दर दिखें, रंग योजना में तालमेल हो तथा यात्रियों के अनुकुल आदि हों।

निगमित मुख्यालय तथा क्षेत्रीय मुख्यालय (उत्तरी क्षेत्र) पर अपने कर्मचारियों के लिए वार्षिक दिवस समारोह के कारण मैं व्यक्तिगत रुप में आपको संबोधित नहीं कर पा रहा हूं। मुझे आशा है कि भविष्य में आपसे संवाद करने का अवसर अवश्य प्राप्त होगा। एक बार फिर मैं इस अवसर पर आपको तथा आपके परिजनों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

धन्यवाद, जय हिन्द ।

From Chairman's Desk

Message on the occasion of 20th Annual Day Function of AAI

(To be read out by the REDs/APDs/Station In-charge on behalf of Chairman, AAI)

At the outset, on the 20th Annual Day of AAI, it is my pleasure to address you all through the local representative of Airports Authority of India.

Ladies& Gentlemen!We are here to celebrateAAI's 20th Annual Day today. The celebration is intended to catch up with the past and to explore the new vistas into the future. Thus, we shall take this opportunity to recognise those who have toiled and sweated to keep the AAI's flag flying high. This is an occasion to meet and interact with each other with renewed warmth and love and to forge further ahead with renewedvigour and camaraderie for the development of new aviation infrastructures.

2. The Annual Day has thus given us an opportunity to showcase the achievements of the organization over a period of time and the benefits it has accrued to our esteemed customers, stakeholders, employees and the country as a whole.

3. It is hoped it will give inspirations to our employees tore-orient them to make more customer friendly and to work towards the betterment of aviation industry and all the stakeholders. I would like to use this opportunity to place on record the AAI's contribution to the Exchequer amounting to Rs.1438.12 crore in the year 2013-14 which includesRs.147 crorespaid as dividend. Beside this, AAI has contributed Rs.658 crore towards Income Tax and Rs.663 crore towards other taxes and fees. On the financial front, the total revenue of AAI is projected to increase from Rs.8170 crore in FY 2013-14 to Rs.8743 crore in FY 2014-15. The profit after tax is expected to be Rs.1533 crorewhich would be Rs.92 crores more than the last year's.

4. The consistent growth in the Air Traffic is paramount for a sustainable civil aviation industry. India has witnessed an unprecedented growth in the last decade, with the growth of passengers by three times from 59 million in FY 2004-05 to 188 million in FY 2014-15 registering thus an annual growth rate of 12% per annum. The AAI has been able to keep pace in bridging the gap between the demands and the available capacity ratio in the airport and ANS infrastructure successfully. The passenger handling capacity has been increased threefold from 72 million in the FY 2006 to 220 million in the last FY 2013-14. The upgradation towards the ANS infrastructure too has been in line with the Global trends. During the current year 2014-15, the growth over the previous year is expected to be 12%. It is projected that passenger traffic may increase

from the present level of 188 million to 320 million in 2022-23. The AAI has, therefore,been making consistent effortsto improve and build the sustainable infrastructures by adopting more and more software solutions to improve the passenger experience and comfort at the airports.

5. The AAI personnel at our airports are first contact with the passengers. They are, therefore,expected to be ambassadors of the Authority and the Govt. of India. For us “A customer coming to the Airport is the most important visitor and I perceive them our benefactor and that we are dependent on him for our livelihood”.We, therefore, have to change our work culture at the Airports to synchronize it in tune with the Hospitality Industry, where the satisfaction of the customers is their paramount concern for their existence. Thepassengers, Airlines, Cargo handlers and other stakeholders contributing to AAI’s revenue, therefore, must be given utmost attention and importance and refrain from making display of the landlord attitude. Towards this, the recent benchmarking scores of different Airports have shown encouraging results. Onthe Scale of 5, the ASQ rating of Kolkata done by ACIhas scored4.66 and has bagged the award of the best improved airport consecutively for last two years. In the latest survey conducted by ACI during the quarter of October – December, 2014 at 11 of our major airports, the average ASQscored is 4.35 against the world average of 4.11.The AAI has also started the process for ISO Certification – ISO 14001 of 19 airports during the current year and it would also go a long way to showcase our concern towards the customers.

6. While highlighting the financial milestones, it is my proud privilege to inform that Airports Authority of India over a period of time has developed more than 60 airports, in metro and non-metro cities.In this endeavour, AAI has been able to develop even small airports at Bikaner, Jaisalmer, Bhatinda,Kadappa, Puducherry, Jalgaon andRajahmundary to promote the Government’s policy for regional and remote area connectivity. While we maybe skeptic about such development of the Airports in the remote areas, where the Airlines have not showntheir willingness to use the facilities and have not started the operation, I may like to answer such skepticism by arguing that there are certain infrastructures which have to be supply driven and the IRR benchmark should not be applied to them. Had that been the case, the Railway’s would never have developed in the British time on the yardstick of IRR, as how the passenger traffic could have been assessed when the people were not aware of its utility and its likely impact on their socio-economic lives. Rightly, therefore, the capital works costing more than Rs.2700 crores are taken in hand, which includes works at airports such as Chandigarh, Jaipur, Kishangarh, Khajuraho, Jammu, Tezu, Pakyong, Portblair, Goa, Vadodara, Tirupati, Hubli and Belgaum.

7. On the front of Air Navigation Service too, the Airports Authority of India has excelled itself by introducing state-of-the-art automation system and it has started

operating from Kolkata Airport since August, 2014. On the front of Satellite Based Navigation System (SBAS) too, AAI in association with ISRO has put up the GAGAN into operations.Again it is supply driven development. Most of the Airlines have yet to make their aircraft compatible with the system so that they may use these facilities for navigation.

8. Balancing the demand & capacity in the air traffic flow management is a challenging task. I am very happy to inform that the initial phase of Air Traffic Flow Management (ATFM) is expected to take-off shortly and making India one of the few ANSP in the world to have such a system. All this together has given India a proud moment when AAI won the prestigious Awards in a consecutive manner i.e. Air Navigation Services JanesATC Award 2014, two ATC Global Awards 2013. The series of awards in the area of ANS has brought yet another laurel by bagging the Golden Peacock Innovative Product and Service Award 2015 for meeting Technology Upgradation to develop it as the World Class Air Traffic Control system.

9. In the field of capacity development, AAI has started many new initiatives. A One-year Advanced Master's programme in ANSP Management has been started in India by AAI &ENAC – the Aviation University in France with an objective to train the operation supervisors and technical managers. Further, AAI has also undertaken R&D initiative in the area of CNS-ATM in association with MITRE Corporation. These efforts are made towards synergizing the technology, human resource and procedures to maximise the safety levels.

10. Another potential area for Airports Authority of India is cargo traffic which has doubled from 1.3 million metrictonnes in FY 2004-05 to 2.5 million metric tonnes in FY 2014-15 with compound annual growth rate of 7%. During the year 2014-15, it has registered a phenomenal growth over the previous year by 10%.With the current thrust of government to take a big leap in the manufacturing, and with the development of the infrastructure and e-commerce for which logistics play a vital role,the AAI is all set to develop the domestic air cargo network in the country; and the AAI has already initiated the process for developing 24 such domestic airports for Common User Domestic Cargo Terminal. Three out of twenty four identified airportshave already been established.

11. Further, AAI has taken initiative to introduce the technology and e-system across the board. It is upgrading the Integrated Cargo Management Systems (ICMS). A state-of-the-art Automated Storage and Retrieval System (ASRS) at Kolkata and Chennai Airports have already been introduced. We are on way to implement the e-office, multi-airport AOCC at 10 airports; and have introduced e-tendering with reverse auctioning. We are in the process of introducing the process of "Automated Check-in" and "Self-baggage drop" at 13 airports by the end of the year.

12. The AAI Management is conscious of its duty and concern towards the welfare of its employees and also conscious about the desiredcapacity development required to meet the future challenges. It has been able to resolve the long pending issue of Inter-se-seniority. Overall the relations between the Management and the Union & Associations continue to be cordial which is a healthy sign and has direct bearing on the process ofimprovingthe working of any organization. AAI is also conscious of its social responsibility and have always been in the forefront to meet the challenges of disasters happening in the country. It has handled the Hudhud cyclone at Vizag, floods inSrinagar and Falin cyclone at Bhubaneswar. Keeping with the call of Government of India towards the "Swachh BharatCampaign", launched on 2nd October, 2014, the Airports Authority of India under its CSR programmehas taken up the construction of toilets in 765 schools spread over 37 districts of the country.AAI has also taken up the cause of SwachhVidyalaya campaign and has earmarked an amount of Rs.35 crores for this programme. Similarly, for the promotion of sports in the country, it has taken the initiative of running the programme of the Scholarship, to the promising Sports person. Some of the sportspersons who have achieved laurels at the International and National level are present here today and we value their effort, and recognize their achievements.

13. Before I conclude I would like to briefly mention about the new initiatives taken up by the Management for increasing the non-aeronautical revenuecomponent. Many new activities have been advised to the Airport Directors which should be initiated. Itincludes the city-side developments. They have been given a time-line of two months to put these initiatives in place for maximizing their revenues. The AAI is also actively engaged with the State Governments to develop thegreenfield or brownfieldairports on a SPV Model in which the State Government is also to be partners and to be one of the stakeholders. We now have to find a revenue model for the development of the new greenfield or brownfield airports so as to make them economically viable and sustainable. For doing this we need a lot of expertise in the above said activities. Till recently, we were used to a monopolistic regime. Things now have changed. We have to appreciate that there is a great deal of requirement for this capacity enhancement to our strideto meet the requirement of planning, engineering and operations.And all such capacity enhancements are required to be of Global standard in order to be competitive in the market. The Authority has already initiated to engage such agencies for our capacity enhancement to meet the challenges of city-side development of the existing Airports,development of Greenfield and the existing brownfield airports with the State Govt., and for bridging the gap at the CHQ level. The Authority is further engaged to introduce the system of development of airports based on the practices in vogue in other PSUs and arenow the global trend. We also have to keep pace with the global trend in improving the aestheticsand environment of our existing Airportsso as to make

them world class. Towards this we shall soon come out with the media advertisement and signages policy so that AAI airports also look trendy in terms of its aesthetics, harmonized colour environment, passenger friendliness, etc.

I am not able to address you in person due to Annual Day Function for our employees at CHQ and RHQ (NR). I look forward to an opportunity to address you all in the times to come. I once again extend my heartiest best wishes to you and your family members on this occasion.

Thank you, Jai Hind.